भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 3 | **फरवरी-मार्च** 2002 | **अंक** 2-3

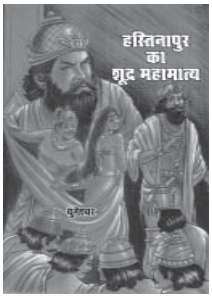

हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य

(उपन्यास)

युगेश्वर

महाभारत में नीतिशास्त्र के सबसे महत्त्वपूर्ण वक्ता विदुर हैं। कौरव कुल के महामात्य विदुर शूद्र शरीर में धर्म के अवतार हैं। कौरवों के महामात्य होकर भी वे महाभारत युद्ध से अलग हैं। हर क्षण सत्य बोलते हैं, सत्य करते हैं। युधिष्ठिर, धृतराष्ट्र एवं श्रीकृष्ण समान भाव से उन पर विश्वास करते हैं। न चाह कर भी दुर्योधन उन्हें बर्दाश्त करता है। उन्होंने लाक्षागृह में जलने से पाण्डवों की रक्षा की थी। द्यूत की निंदा की थी। दुर्योधन को बार-बार डाँटा था। धृतराष्ट्र को उत्तम सलाह दी थी—वे दुर्योधन का परित्याग करें, यह कुल नाशक है।

उनमें शूद्र होने की हीनता का नितांत अभाव है। सभा में दु:शासन द्रौपदी को नंगा कर रहा था। उस समय भीष्म जैसे महारथी, महात्मा भी मौन हैं। वे मन से पाण्डवों के साथ हैं। किन्तु तन कौरवों को दे दिया है। कौरवों के लिये ही मरते, मारते हैं। विदुर में ऐसा कोई द्वैध नहीं है। उनका पक्ष सीधा और स्पष्ट है। रिश्ते में वे पाण्डव और कौरव दोनों के चाचा हैं। किन्तु पाण्डवों के मौसा भी हैं। विदुर पत्नी पाण्डव माता कुंती की बहन है। पाण्डव को 13 वर्षों का वनवास भोगना है। पाण्डव द्रौपदी के साथ वन गए। पाण्डव माता कुंती विदुर के घर रहीं।

विदुर ने कभी, किसी भी स्तर का शस्त्र नहीं ग्रहण किया। उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व अहिंसक सत्याग्रही का है। इस महान अहिंसक योद्धा, शूद्र महामात्य एवं सत्याग्रही की कथा भारतीय राजनीति और सामाजिक जीवन को दिशा देती है।

पृष्ठ : 160 मूल्य : 140.00

15 वाँ विश्व पुस्तक मेला, नयी दिल्ली

28 जनवरी 2002 से 4 फरवरी तक 15वें विश्व पुस्तक मेले का आयोजन हुआ। इस मेले में देश-विदेश के 1200 प्रमुख प्रकाशक सम्मिलित हुए। मेले में अनेक प्रकाशकों की नई पुस्तकों का लोकार्पण हुआ।

इस मेले ने पुस्तक वर्ष में एक नई परम्परा की शुरुआत की। पुस्तक मेले के उद्घाटन के अवसर पर श्री प्रमोद महाजन का स्वागत 'बुके' से नहीं 'बुक' (पुस्तक) से किया गया। डॉ० कपिला वात्स्यायन का स्वागत भी पुस्तक से किया गया। बंगाल में सामाजिक तथा धार्मिक अवसरों पर उपहारस्वरूप पुस्तक देने की प्रथा है। इसी कारण बंगाल में पुस्तक प्रेमी पाठकों की अपार संख्या है। कलकत्ते में भी 29 जनवरी 2002 से 10 फरवरी 2002 तक पुस्तक मेले का आयोजन हुआ है। इस बार रवीन्द्रनाथ टैगोर की पुस्तकों पर कापीराइट समाप्त होने के कारण अनेक प्रकाशकों ने रवि बाबू की पुस्तकों के सस्ते संस्करण प्रकाशित किये हैं। इससे बंगाल के पाठकों का उत्साह देखने लायक है। मेले में सभी प्रमुख लेखक भाग लेते हैं, पाठकों से उनका संवाद होता है। उने लेखन और पुस्तकों की चर्चा होती है।

मेले में बंकिम, शरत, विभूतिभूषण बंधोपाध्याय और सत्यजित राय के समग्र की बड़ी माँग है। बंगला के पाठक हिन्दी लेखकों से भी प्रभावित हैं, वे हिन्दी पुस्तकों में भी रुचि लेते हैं। सामान्य पाठकों की दृष्टि से भी कोलकाता का पुस्तक मेला अत्यन्त सफल है।

— सम्पादक

15वें विश्व पुस्तक मेले में उपराष्ट्रपति

उपराष्ट्रपति श्रीकृष्णकांत ने 28 जनवरी को 15वें विश्व पुस्तक मेले का उद्घाटन करते हुए कहा कि बच्चों के विकास में किताबों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। देश में बच्चों के लिए आकर्षक रूप से छपी पुस्तकें कम कीमत पर उपलब्ध नहीं हैं। प्रकाशकों को इस ओर ध्यान देकर सचित्र बाल पुस्तकें निकालनी चाहिए। उन्होंने कार्यक्रम में पुस्तक वर्ष के अवसर पर डाक टिकट का लोकार्पण भी किया। उपराष्ट्रपति ने कहा कि दुनिया में भारतीय प्रकाशन उद्योग भाषाओं की दृष्टि से सबसे बड़ा उद्योग है, क्योंकि देश में 22 भाषाओं में पुस्तकें छापी जाती हैं। अमेरिका और ब्रिटेन के बाद अंग्रेजी पुस्तकों के प्रकाशन के मामले में भारत का तीसरा स्थान है। पिछले 50 वर्ष में प्रकाशन जगत ने काफी विकास किया है। आज भारतीय प्रकाशन उद्योग एफ्रो-एशिया और दक्षेस क्षेत्र की पुस्तक जरूरतों को पूरा करने में सक्षम है।

प्रमोद महाजन ने इस अवसर पर कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों को किताबों के लिए खतरा माना जा रहा है। लेकिन यह माध्यम पुस्तकों का स्थान नहीं ले सकते, क्योंकि इनमें सिर्फ गति है, गहराई नहीं। इंटरनेट क्रान्ति के बावजूद पुस्तक के अस्तित्व को कोई खतरा नहीं है।

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

पुस्तकें सदा माँग में रही हैं और मानवता को सही रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करती रही हैं। वरिष्ठ हिन्दी लेखक निर्मल वर्मा ने पुस्तक मेले को महाकुम्भ बताते हुए कहा कि कुम्भ से लौट कर जाते समय गंगाजल ले जाने के बजाय यहाँ से लोग पुस्तकें ले जाते हैं। उन्होंने कहा कि पुस्तक आदमी के अस्तित्व का मूल्यांकन करने में मददगार होती हैं।

किताबों का महाकुंभ

जिस अनुपात में साक्षरता बढ़ी है, जिस अनुपात में प्रति व्यक्ति आमदनी बढ़ी है और जिस अनुपात में टी वी और इलेक्ट्रानिक मीडिया का विकास हुआ है उस तुलना में किताबों की संस्कृति पिछड़ी है। इन सबके लिए सरकार की मीडिया नीति के साथ ही किताबों की उपेक्षा करने की नीतियाँ भी एक सीमा तक जिम्मेवार हैं। अब डाक दरें बढ़ाते जाने का मतलब किताबों पर पढ़ने की आदत पर चोट करना है क्योंकि पाठक खासकर हिन्दी का पाठक तो दूरदराज गाँवों और कस्बों तक है और 15 रुपये के किताब पर 20 रुपये का डाक खर्च देना कौन चाहेगा। वेट अर्थात् वैल्यू एडेड टैक्स की चर्चा भले साल भर के लिए टल गई है वरना प्रकाशन को भी सामान्य व्यवस्था मानकर किताबों को वेट के दायरे में लाने की बात थी। दुनिया में ऐसा कहीं भी नहीं है। पर जब सरकार डाक विभाग का राजस्व बढ़ाने अपना राजस्व बढ़ाने की मुहिम में किताबों को भी बख्श देने को तैयार नहीं है तो पुस्तक वर्ष मनाने का कोई खास मतलब समझ में नहीं आता।

मेले का आयोजन अपने आप में सुखद अनुभूति है और यही कारण है कि दिन ब दिन इस मेले का आकार, इसमें भागीदारों की संख्या और किताबों के कारोबार के आँकड़ों में वृद्धि ही होती जा रही है। दर्शकों की संख्या भी दिनों दिन बढ़ रही है। इस क्रम को थमने नहीं देना चाहिए और शिकवे-शिकायतें दूर करते हुए पुस्तक संस्कृति को बढ़ावा देने के काम में सभी को लगना चाहिए।

—हिन्दुस्तान

आत्मा के लिए आहार

वस्तुत: पुस्तकें नहीं हैं, अपितु पुस्तकों की वेशभूषा में वस्तुएँ हैं। शरीर की रक्षा के लिए हम भोजन करते हैं, उसे कपड़ों से सजाते हैं, उसे स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम भी करते हैं। लेकिन क्या हमने सोचा है कि हमारा दूसरा जो सबसे महत्वपूर्ण तत्त्व है, उसकी रक्षा और उसके विकास के लिए हम क्या कुछ करते हैं? शायद नहीं। चूँकि बुद्धि हमें दिखाई नहीं देती, इसलिए हम उसके लिए कुछ करते भी नहीं। इस बुद्धि का भोजन क्या हो सकता है? पुस्तकों के सिवाय कुछ भी नहीं। इस बुद्धि की कसरत क्या हो सकती है? चिन्तन और मनन के सिवाय कुछ भी नहीं। इसके लिए जरूरी कच्चामाल कहाँ से आयेगा, पुस्तकों से।

पुस्तकें महान प्रतिभा और मानव जाति के लिए छोड़ी गई पैतृक सम्पत्ति है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी को सौंपी जाने के लिए है। पुस्तकें तो मानों अभी अजन्में व्यक्तियों के लिए दिये गये उपहार हों। **(एडीसन)**

व्यक्ति का निर्माण मात्र उसका अपना निर्माण नहीं है, बल्कि वह इतिहास की देन है, और यह इतिहास पुस्तकों में सुरक्षित है।

जब हम पुस्तकें पढ़ते हैं, तो न जाने कितने लोगों के जीवन के अनुभवों को अपने अन्दर समेटते चलते हैं। पुस्तकों के जरिए हम न जाने कितने युगों की यात्रा कर लेते हैं और कितने लोगों के अनुभवों को अपना अनुभव बना लेते हैं।

''मैं बिना पुस्तकों के स्वर्ग में रहने के बजाए पुस्तकों के साथ नर्क में रहना अधिक पसन्द करूँगा।'' **(लोकमान्य तिलक)**

दुर्भाग्य है कि हमने पुस्तकों को न केवल विद्यालय और महाविद्यालयों में अध्ययन करने तक सीमित कर दिया है। जिस तरह वर्तमान जीवन में घरों में से आँगन को गायब कर दिया है, ठीक इसी तरह कमरों में से पुस्तकें भी गायब होती जा रही हैं। ''पुस्तकों से विहीन घर खिड़कियों से विहीन वन के समान है।'' **(होरेस)**

पुस्तकें हमें केवल बौद्धिक रूप से ही सबल और सक्षम बनाकर एक जबरदस्त आत्मविश्वास

शेष पृष्ठ 3 पर

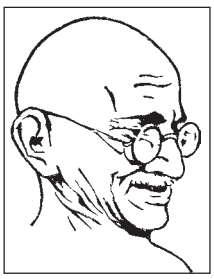

कुछ लोग कहते हैं कि लड़ाई तो छिड़ गई है, कश्मीर में क्या होगा? मैं कहता हूँ कुछ नहीं होगा। कश्मीर में जो लोग हैं वे बहादुर हैं। वहाँ हिन्दू, मुसलमान और सिख सब एक साथ रहते हैं। जो हमला करने गए हैं उनको वे कह दें कि अपने घर वापस जाओ। अगर हमला करोगे तो हमारी लाश पर खड़ा होना होगा। श्रीनगर आपको वैसे नहीं मिल सकता। हमारी जो सेना वहाँ गई है उसको कोई छुएगा नहीं। अगर वे मर जाते हैं तो वे अमर हो जाएँगे।

— महात्मा गाँधी

पुस्तकों से 350 करोड़ की विदेशी मुद्रा की आय

नेशनल बुक ट्रस्ट के निदेशक श्री निर्मल कान्ति भट्टाचार्य के अनुसार भारतीय पुस्तकों के निर्यात से विदेशी मुद्रा आयी, गत छह वर्षों में यह 12 गुना बढ़ गयी है। 1995 में विदेशी मुद्रा आय जहाँ 30 करोड़ रुपये थी वहाँ 2001 में यह 300 करोड़ रुपये हो गयी।

बदनाम होंगे तो क्या नाम न होगा?

श्री राजेन्द्र यादव ने आगरा में एक पत्रकार वार्ता के दौरान कहा—रावण के पक्षधर लोगों की नजर में हनुमान आतंकी हैं और औरंगजेब को मानने वाले लोगों की नजर में शिवाजी आतंकवादी हैं।

वाराणसी में 13 जनवरी को शहर दक्षिणी विकास समिति ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के द्वार पर मालवीयजी की प्रतिमा के समक्ष एकत्र भीड़ की उपस्थिति में श्री यादव का पुतला फूँका और माँग की कि श्री यादव को सार्वजनिक रूप से माफी माँगनी चाहिए वरन उनके खिलाफ जनहित याचिका दायर की जायगी। सभा की अध्यक्षता अजीज अहमद और संचालन विद्या ग्वाल ने किया।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय व स्पेन के बेलियारिक आइलैंड विश्वविद्यालयों के बीच आपसी सहमति के अन्तर्गत दोनों देशों के प्रमुख लेखकों के साहित्य के अनुवाद, मानविकी के विभिन्न विषयों जैसे दर्शन, भाषा, विज्ञान, संस्कृत, कला तथा इतिहास आदि के विशेष सन्दर्भ में सहयोगात्मक कार्यक्रम, संस्कृत-कैटलान शब्दकोश तथा भारत कला भवन में सन् 2003-4 में स्पेनिश कला की प्रदर्शनी का आयोजन किया जायगा।

पृष्ठ 2 का शेष

से नहीं भर देतीं, बल्कि भाव-बोध के स्तर पर भी ऊपर उठाकर हमें एक अनोखी आत्मशक्ति प्रदान करती हैं। ये हमारे अनुभवों का उदात्तीकरण करने में सबसे अधिक सक्षम हैं। हालांकि कला के सभी रूप हमारे भावों को उदात्तता की ओर ले जाते हैं, लेकिन इनमें से पुस्तकें ही वे माध्यम हैं जो विशुद्ध उदात्तता प्रदान करती हैं। यहाँ 'विशुद्ध' शब्द इसलिए उपयोग में लाया जा रहा है, क्योंकि जब हम नाटक देखते हैं, चित्र देखते हैं या नृत्य देखते हैं तो संगीत को छोड़कर तब हमारा मस्तिष्क उन्हीं चित्रों तक सीमित हो जाता है जो हम देख रहे हैं। लेकिन पुस्तकें जब हम पढ़ते हैं (और संगीत सुनते हैं) तब जो हमारे मस्तिष्क में बिम्ब बनते हैं, वे शुद्ध रूप से हमारे अपने होते हैं। वे किसी के द्वारा दिये गये नहीं होते। स्वाभाविक है कि अपने ही द्वारा रचित बिम्ब हमें विशुद्ध उदात्तता की ओर ले जाते हैं।

ऐसा केवल पुस्तक और संगीत में ही सम्भव है। शायद एक यह भी कारण रहा होगा कि भारतीय मनीषा ने ज्ञान की जिस देवी, यानि (सरस्वती) की कल्पना की, उनके एक हाथ में पुस्तक रखी तो दूसरे में वीणा, यानि की अक्षर और संगीत दोनों, क्योंकि ये दोनों ही माध्यम विशुद्ध उदात्तता की ओर ले जाते हैं।

हमें संकल्प लेना ही चाहिए कि हम हर माह कोई न कोई पुस्तक अवश्य ही पढ़ेंगे। कुछ समय के बाद आप देखेंगे कि किस तरह से पुस्तकों के इस अध्ययन ने आपके सोचने-समझने के तौर तरीकों को बदलकर आपके जीवन के रास्तों को कितना आसान और सुखद भी बना दिया है। इससे अच्छा मित्र, इससे बड़ा शुभचिन्तक और सही सहयोगी ही कोई दूसरा हो।

पुरस्कार-सम्मान

के०के० बिड़ला फाउण्डेशन के पुरस्कार

सरस्वती सम्मान

बिड़ला फाउण्डेशन प्रतिवर्ष पाँच लाख रुपये का सरस्वती सम्मान भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित किसी भी भाषा के लेखक को प्रदान करता है।

वर्ष 2001 का सरस्वती सम्मान पंजाबी की सुपरिचित कथाकार-उपन्यास **डॉ० दिलीप कौर टिवाणा** को साहित्य में योगदान के लिए प्रदान किया जायगा। डॉ० टिवाणा ने अब तक 27 उपन्यास और 7 कहानी संग्रह लिखे हैं। उनकी आत्मकथा का पहला भाग और एक साहित्यिक जीवनी भी प्रकाशित हो चुकी है।

डॉ० टिवाणा को उनके महाकाव्यात्मक उपन्यास 'कथा कहो उर्वशी' के लिए प्रदान किया गया है। 1999 में प्रकाशित 600 पृष्ठों के इस उपन्यास में तीन पीढ़ियों की कथा को पाँच भागों में पिरोया गया है। विभाजित व्यक्तियों, टूटे और बिखरे परिवारों की कथा कहता यह उपन्यास आज के यथार्थ की कुशल अभिव्यक्ति है।

व्यास सम्मान

बिड़ला फाउंडेशन प्रतिवर्ष ढाई लाख रुपये का व्यास सम्मान उत्कृष्ट हिन्दी कृति पर प्रदान करता है।

वर्ष 2001 का व्यास सम्मान हिन्दी के सुप्रसिद्ध आलोचक कवि एवं कथाकार **रमेशचन्द्र शाह** को दिया जायगा।65 वर्षीय श्री शाह को यह सम्मान उनकी चर्चित पुस्तक' आलोचक का पक्ष' के लिए दिया जायगा।

राधाकृष्ण पुरस्कार

झारखण्ड के सुप्रसिद्ध साहित्यकार राधाकृष्ण की स्मृति में 'रांची एक्सप्रेस' द्वारा प्रायोजित 21वें वर्ष का पुरस्कार जमशेदपुर के सुविख्यात लेखक **जयनन्दन** को दिया जायगा। पुरस्कारस्वरूप 11,000 रुपये नकद एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायगा।

56वें गणतंत्र दिवस पर अलंकृत साहित्यकार

पद्मभूषण

हिन्दी के प्रतिष्ठित कहानीकार, निबन्धकार **निर्मल वर्मा** को भारत सरकार ने पद्मभूषण से सम्मानित किया है। निर्मल वर्मा ने अब तक अनेक साहित्यिक पुरस्कार प्राप्त किये हैं।

1985 का **साहित्य अकादमी** पुरस्कार इनके संग्रह 'कव्वे और काला पानी' पर मिला। इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण कृतित्व पर **साधना सम्मान,** 1995 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का **राममनोहर लोहिया अतिविशिष्ट सम्मान,** तथा 1997 में भारत और यूरोप प्रतिश्रुति के क्षेत्र पर भारतीय ज्ञानपीठ के **वाग्देवी पुरस्कार** तथा वर्ष 1999 का **ज्ञानपीठ पुरस्कार** पंजाबी कथाकार गुरुदयाल सिंह के साथ संयुक्त रूप से प्रदान किया गया।

पद्मभूषण प्राप्त अन्य साहित्यकार, कलाकार

बी०के०एस० आयंगर
(साहित्य एवं शिक्षा, महाराष्ट्र)
हबीब तनवीर (कला-रंगमच, दिल्ली)
एवगेनी पेट्रोचिव चेलिशेव
(साहित्य एवं शिक्षा, रूस)

पद्मश्री

प्रो० अशोक रामचंद्र केलकर (साहित्य एवं शिक्षा, महाराष्ट्र), गोपाल वाटेरे (नाटककार, उड़ीसा), ज्ञानचंद जैन (प्रकाशन, दिल्ली), डॉ० श्रीमती इंदिरा गोस्वामी (साहित्य एवं शिक्षा, दिल्ली), श्री मधु मंगेश कार्णिक (साहित्य एवं शिक्षा, महाराष्ट्र), डॉ० मुनिरत्न आनन्द कृष्णन (साहित्य एवं शिक्षा, चेन्नई), श्री वेलिस्सरो पीलस डिमिट्रस सी० (साहित्य, एथेन्स)।

भोजपुरी सम्मान

साहित्यकार **हृषीकेश सुलभ** को वर्ष 2001 का बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान प्रदान किया जायगा।

न गोपी न राधा

डॉ० राजेन्द्रमोहन भटनागर का अप्रतिम उपन्यास है। मीरा न गोपी थी, न राधा। वह मीरा ही थी। अपने आप में मीरा होने का जो अर्थ-सौभाग्य है, वह न गोपियों को मिला था और न राधा को। वह अर्थ-सौभाग्य क्या था, यही इस उपन्यास का मर्म है।

इसी मर्म की जिज्ञासा ने डॉ० भटनागर को मीरा पर तीन उपन्यास लिखने की प्रेरणा दी—'पयस्विनी मीरा', 'श्यामप्रिया' और 'प्रेमदीवानी'। अचरज यह है कि ये सभी उपन्यास एक-दूसरे से पूर्णतया भिन्न हैं—कथ्य, चरित्र और भाषा-शैली में। इनमें यह उपन्यास तो सबसे मूलत: भिन्न है। इसमें मीरा का चरित्र एक वीर क्षत्राणी का है और भक्तिन समर्पिता का। विद्रोह में समर्पण की सादगी यहाँ दृष्टव्य है।

सुविख्यात साहित्यकार डॉ० राजेन्द्रमोहन भटनागर कदाचित् विश्व में ऐसे पहले ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं, जिन्होंने मीरा और महाराणा प्रताप पर क्रमश: चार और दो बृहत् उपन्यास हिन्दी को दिए हैं। ये सभी उपन्यास कथ्य, चरित्र, भाषा-शैली आदि की दृष्टि से एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न हैं।

आपके प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास हैं—'महारानो','नीले घोड़ का सवार','एक अंतहीन युद्ध', 'राज राजेश्वर', 'गन्ना बेगम', 'पयस्विनी मीरा', 'श्यामप्रिया', 'प्रेमदीवानी', 'सूरश्याम', 'युगपुरुष अम्बेडकर', 'सिद्ध पुरुष', 'अन्तिम सत्याग्रह' इत्यादि।

डॉ० भटनागर का कथा-साहित्य अंग्रेजी, कन्नड़, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं में अनूदित होकर ख्याति प्राप्त कर सका है। आपके 'विकल्प', 'सन्नो', 'नीले घोड़े का सवार' आदि पर टेली फिल्म और धारावाहिक फिल्म बनी हैं, बन रही हैं।

आपको राजस्थान साहित्य अकादमी ने विशिष्ट साहित्यकार सम्मान से अलंकृत किया है। आपको नाहर सम्मान साहित्य पुरस्कार के अलावा अनेक प्रान्तीय तथा राष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं।

करिया अंग्रेजन के इहे कारनामा, इण्डिया आजाद भइल, भारत गुलामे बा

श्री विष्णुकान्त शास्त्री

आजमगढ़ में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय भोजपुरी संगम के समापन के अवसर पर उत्तर प्रदेश के राज्यपाल विष्णुकान्त शास्त्री ने कहा—भारत अकेला एक देश है, जिसके संविधान में ही दो नाम हैं—एक इण्डिया है तो दूसरे का नाम भारत है। आज इण्डिया की संस्कृति ही भारत पर हावी है। भाषायी संक्रमण का दौर चल रहा है। हिन्दी में अनावश्यक अंग्रेजी का मिश्रण हो रहा है।

भोजपुरी समाज और भोजपुरी भाषा में जो सबसे बड़ी चीज है वह यह कि इस समाज का राम अभी जिन्दा है। भोजपुरी हीरे की खान है और इसी खान से अनेक विभूतियाँ पैदा हुईं। भोजपुरी भाषा से रस लेकर ही हिन्दी समृद्ध हुई है। जो मर्म, जो रस और अभिव्यक्ति की जो ऊर्जा भोजपुरी में वह अन्यत्र कहीं नहीं मिलती।

लोक और वेद में यदि कहा जाय कि कौन बड़ा है तो मेरा मानना है कि लोक बड़ा है। इसलिए कि लोक की मान्यता का प्रमाण है यह बोलियाँ, जहाँ बड़ी से बड़ी बात सहजता से कह दी जाती हैं। जिस भोजपुरी के बल पर हम जीवन्त बने हैं, उस भोजपुरी के लिए इमें कुछ करने की जरूरत है, क्योंकि जड़ से कटकर कोई भी भाषा कोई भी संस्कृति फलफूल नहीं सकती है।

भोजपुरी साहित्य की महत्वपूर्ण कृति

वाह! रजा तेग़ अली

काशी ऐसी नगरी है, जहाँ बड़े-बड़े विद्वान पैदा हुए हैं। तो वहाँ स्वनामधन्य गुंडे भी पैदा हुए। ऐसे गुंडे जिन्होंने साहित्य और समाज के लिए उत्थान में सहयोग किया। नन्हकू सिंह, भंगड़ भिक्षुक, दाताराम नागर, प्रभृति अपने समय के प्रख्यात गुंडा थे। उन्हीं की परम्परा में थे तेग़ अली। गुंड से गुंडा शब्द बना है। जिसका अर्थ है आश्रय देना, रक्षा करना। काशी के गुंडे गरीबों को आश्रय देते थे। उनकी रक्षा करते थे। इसलिए उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा थी। तेग़ अली गुंडा थे और सहृदय रसिक भी, वे उन्नीसवीं सदी में और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के परिचितों और साहित्य मण्डली के सदस्य भी थे। खांटी बनारसी थे। रसिक थे। शरीर सौष्ठव में सम्पन्न थे। गायक थे। होली में अपनी मण्डली के साथ होली गाते थे। कवि भी थे। विशुद्ध बोलचाल यानि काशिका में कविता करते थे। उन्होंने कविता के लिए गज़ल को अपनाया। उन्होंने 23 गज़लों में 200 शेरों की रचना की। उनकी रचनाओं का यह संग्रह 'बदमाश दर्पण' के नाम से 1895 ई० में पुरुषोत्तम दबे ऋषि ने इसे पुन: प्रकाशित किया था। बाद में तेग अली और काशिका नाम से यह पुस्तक छपी थी। आलोच्य कृति अपने मूलनाम से और नयी टीका के साथ प्रकाशित हुई है।

प्रस्तुत संस्करण अधिक शोधपरक है। तेग़अली के जीवन परिचय और उनकी रचना की समीक्षा तो प्रस्तुत की ही गयी है। इस संस्करण के सम्पादक और व्याख्याकार श्री नारायणदास विद्वान दादा रत्नाकरजी के विद्वान पौत्र हैं। उन्होंने पुस्तक के आरम्भ में काशिका में सरस्वती वन्दना प्रस्तुत कर पुस्तक की टीका में चार चाँद लगा दिया है। आप उर्दू फारसी के अच्छे जानकार हैं। इसीलिए तेग़ अली के भावों को सही ढंग से निरूपित किया है। बदमाश शब्द ही लीजिए बद + मआश = बदमाश। बद-बुरी मआश जीविका। बुरे साधनों से जीविकोपार्जन करनेवाले। इस पुस्तक में गुंडा या बदमाश के जीवन की झलक प्रस्तुत की गयी है। अत: बदमाश दर्पण बड़ा सोच समझकर नामकरण किया गया है।

उर्दू गज़लों में आशिक और माशूक के बीच प्रेमालाप वर्णित होता है। तेग़अली अपनी गज़लों में अपने माशूक से बातें करते हैं और उसके सौंदर्य का वर्णन करते हैं। उनकी भाषा उर्दू नहीं विशुद्ध काशिका है। इसमें काशी की संस्कृति की स्पष्ट झलक दिखाई पड़ती है। यहाँ की संस्कृति में दण्ड बैठक का बहुत बड़ा महत्व है। तेग़अली अपने माशूक से आग्रह करते हैं दंड, बैठक और मुगदर नित्य चलाया करो तथा कुश्ती और छुरा का भी अभ्यास किया करो—

मुद्गर हिलावऽऽ जनकरऽ बैठक किहल करऽ।
हम तऽ कहीला छुरी और कुस्ती लड़ल करऽ॥

अपने माशूक के प्रति अनन्य प्रेम है। वह कहते हैं कि हम तो रहर चबाकर अपना खर मिटाते हैं। पर तुम्हारे लिए दूध में खाजा मिलाकर रखा है।

हम खर मिटाव कइली हैं रहिला चबाय के।
भेंबेल धरल बा दूध में खाजा तोरे बदे॥

तेग़अली का प्रसिद्ध और बड़ा ही जोरदार शेर है—

भौं चूम लेईला कहूँ सुन्नर जे पाईला।
हम ऊ हई जे ओंठ पै तरुआर खाईला॥

इसी तरह उनका एक और जोरदार शेर है—

कहली कि काहे आँखी में सुरमा लगावऽ लऽ
हँस के कहैंलैं छूरी के पत्थर चटाइला॥

इस छोटी सी गज़ल की पुस्तक में तेग़अली ने गागर में सागर भरने का प्रयास किया है। तेग़अली भारतेन्दु युग के हिन्दी (काशिका) में गज़ल लिखने वाले श्रेष्ठ गज़लकार हैं। उनकी गज़लों में ऐसी रवानी है कि पाठक वाह! वाह! कर उठता है। एक पक्के खांटी बनारसी ने बदमाश दर्पण जब पढ़ा तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि काशिका में ऐसी रचना भी है। वह इन गज़लों को पढ़ने के बाद सहसा वह अहसास करता हुआ कहा—वाह! रजा तेग़अली।

पुस्तक का मुद्रण और कवर पृष्ठ पर तेग़अली का कल्पित चित्र नयनाभिराम और निर्दोष है। अच्छे कागज पर छपाई ने पुस्तक का सौंदर्य और भी बढ़ाया है। मुद्रक-प्रकाशक दोनों बधाई के पात्र हैं।

—'गांडीव' से

बदमाश दर्पण-तेग़अली
सम्पादक-व्याख्याकार : नारायणदास
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी
प्रथम संस्करण मूल्य : 60 रुपये

भोजपुरी लोक-साहित्य

डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय

भोजपुरी साहित्य के ख्यातिलब्ध विद्वान् डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय के इस शोधपरक ग्रन्थ में भोजपुरी भाषा और उसका साहित्य, लोक साहित्य की भूमिका, भोजपुरी लोकगाथा, लोक कथायें, भोजपुरी लोकगीतों में करुण रस, भोजपुरी ग्राम्य गीत, धरती के गीत आदि 16 अध्यायों में 450 पृष्ठों के अन्तर्गत भोजपुरी संबद्ध सभी विषयों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

सजिल्द : 400.00 अजिल्द : 250.00

पुरइन-पात

सम्पादक

डॉ० अरुणेश नीरन व डॉ० चितरंजन मिश्र

भोजपुरी भाषा की उत्कृष्ट गद्य-पद्य रचनाओं का प्रतिनिधि संकलन। कविता, व्याख्यान, नाटक, कहानी, ललित निबन्ध, यात्रा संस्मरण, व्यंग्य सभी विधाओं पर विशिष्ट रचनाएँ।

320.00

भोजपुरी-हिन्दी शब्दकोश

सम्पादक

डॉ० उमाशंकरप्रसाद सिंह
डॉ० ब्रजभूषण मिश्र

300.00

पुस्तक समीक्षा

तज कोलाहल की अवनी रे!

जयशंकर प्रसाद छायावाद युग के प्रमुख स्तम्भ थे। उन्होंने अपनी कविता से भारतीय संस्कृति को उजागर करने, नाटकों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना जगाने तथा कथा साहित्य एवं निबन्धों के द्वारा सांस्कृतिक चेतना प्रदान करने का प्रयास किया। उनका साहित्य जितना सांस्कृतिक था उतना ही उनका व्यक्तित्व भी। उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश संस्मरणों के माध्यम से होता है जिससे उनके व्यक्तित्व की गहराई तथा उनके परिष्कृत संस्कारों की जानकारी मिलती है। आलोच्य ग्रन्थ 'अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर प्रसाद' पर 26 संस्मरणों कतिपय पत्रों और चित्रों का मनोरम संकलन है।

अब तक प्राय: यह कहा जाता रहा है कि हिन्दी में संस्मरण नहीं लिखे जाते। पर, अब हिन्दी में इस अभाव की पूर्ति तेजी से हो रही है। प्रसादजी का जीवन अत्यन्त सांस्कृतिक था। प्रात: बेनियाबाग में टहलना, स्नान, पूजा-पाठ, ठंडई छानना, साहित्य चिन्तन, लेखन और साहित्य चर्चा अपने सीमित मित्रों के बीच ही उन्हें प्रिय थी। कोलाहल से दूर रहने वाले वे व्यक्ति थे। कवि सम्मेलनों से दूर तथा शाम को अपनी मित्र मण्डली के साथ साहित्य-चर्चा उन्हें प्रिय थी। उनके मित्रों में रायकृष्णदास, विनोदशंकर व्यास, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', शिवपूजन सहाय, रामनाथ 'सुमन', जनार्दनप्रसाद झा 'द्विज' प्रभृति थे। प्रस्तुत संकलन में उनके मित्रों के लिखे तथा अन्य व्यक्तियों द्वारा लिखे गये प्रामाणिक संस्मरण हैं, जिससे उनके जीवन और साहित्य पर प्रकाश पड़ता है। हिन्दी जगत को शायद ही जानकारी है कि वे कुश्ती लड़ते थे और जोड़ी भी फेरते थे। उनकी जोड़ी आज भी सुरक्षित है। प्रसादजी पर यह संस्मरणों का प्रथम प्रामाणिक अनूठा संकलन है।

इस ग्रन्थ के संकलयिता सम्पादक पुरुषोत्तमदास मोदी मात्र हिन्दी पुस्तकों के श्रेष्ठ प्रकाशक नहीं हैं, बल्कि साहित्य की उच्च शिक्षा प्राप्त, हिन्दी के गहन शौकिया सुरुचिपूर्ण अध्येता और साहित्य पारखी हैं। उन्होंने प्रसाद पर संस्मरणों का संकलन-सम्पादन कर हिन्दी साहित्य का बहुत बड़ा हित चिन्तन किया है अन्यथा इसकी बहुत सारी सामग्री यत्र-तत्र बिखरी पड़ी रह जाती।

इस संकलन में प्रसादजी के निधन पर 'आज' में प्रकाशित पूरे समाचार का संकलन विशेष महत्त्वपूर्ण है। आज हिन्दी का साहित्यकार मर जाता है, उसकी मात्र सूचना तक ही छप पाती है। पर पहले कितनी प्रमुखता से समाचार छपते थे, इसका प्रमाण यह समाचार है। इसके साथ ही उनके मित्रों के पत्र, उनकी हस्तलिपि, प्रसादजी के अंग्रेजी में पत्र की प्रतिलिपि प्रमुख आकर्षण है। इस संकलन में वह ऐतिहासिक चित्र भी है जिसमें 1935 में 'रत्नाकर रसिक मण्डल' के तत्वावधान में पण्डित जवाहरलाल नेहरू और श्रीमती कमला नेहरू का अभिनन्दन किया गया था। इस चित्र में प्रसाद, प्रेमचंद, सम्पूर्णानंद, लक्ष्मीकान्त झा, रूद्र काशिकेय, कान्तानाथ पाण्डेय 'चोंच', दिनेशदत्त झा, बलदेवप्रसाद मिश्र, रामचन्द्र शुक्ल प्रभृति उपस्थित थे। पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ पर प्रसाद की चुनी हुई पंक्तियों का संकलन सोने में सोहागा जैसी हैं।

कुल मिलाकर यह प्रसादजी के जीवन पर प्रामाणिक संस्मरणों से पाठकों का ज्ञानवर्धन होगा, ऐसी आशा है। पुस्तक का मुद्रण, मुखपृष्ठ आकर्षक है। ऐसी कृति के लिये सम्पादक, मुद्रक और प्रकाशक बधाई के पात्र हैं। **—'गांडीव'से**

अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद'
सं० : पुरुषोत्तमदास मोदी
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी
प्रथम संस्करण मूल्य : 150 रुपये

यथार्थ और आकांक्षा का अंतर्द्वंद्व

उपन्यास विधा ने बीती सदी के आरम्भ में पश्चिम से लेकर भारतीय साहित्य तक में अपनी खास धमक दर्ज करायी है। नई सदी की शुरुआत भी उपन्यास की खास उपस्थिति के साथ हो रही है। बीती सदी के आखिरी दशक में हिन्दी में खूब उपन्यास छपे और चर्चा में भी रहे। कई पुरस्कृत हुए और कई विवाद में भी रहे। उपन्यास की विधा साहित्य के बाहर सक्रिय रचनाकारों को भी आकृष्ट करती रही है। उपन्यास के लिए जो लेखक पूर्णकालिक है उनका लेखन तो चर्चित रहता है मगर जो अन्य विधाओं से जुड़े लेखक हैं उनका लेखन लगभग अचर्चित रह जाता है। पत्रकारिता से पूर्णकालिक रूप से जुड़े बच्चन सिंह का नवीनतम उपन्यास 'ननकी' अभी प्रकाशित होकर आया है। इस उपन्यास के बारे में बताया गया है कि यह ग्रामीण परिवेश का है।

'ननकी' उपन्यास दो पात्रों के बीच का संवाद है। ये निम्नवर्गीय स्त्री-पुरुष हैं, जिनके बीच लम्बी बातचीत की शुरुआत से उपन्यास का आरम्भ होता है और संवाद में ही उपन्यास का अन्त हो जाता है। वस्तुत: इसमें जो परिवेश निर्मित है वह यथार्थ की उन छवियों से बना है जो इन दो पात्रों के मन:संसार में अंकित हैं। उपन्यास का पुरुष पात्र पूरी तरह भौतिकवादी सोच रखता है। बदलते दौर में उपभोग केन्द्रित मानसिकता रखने वाला यह पात्र अपने सुख स्वप्नों और आकांक्षाओं से ओतप्रोत वक्तव्य ही देता है। ननकी इन दोनों की पुत्री है। स्त्री पात्र के लिए ननकी एक ऐसी जिम्मेदारी है जिसे निर्वहन करना दम्पति के लिए जरुरी है जबकि पुरुष पात्र के लिए जवान होती ननकी एक ऐसी आकांक्षा का आधार है जिसके द्वारा वह अपने भवितव्य को सुघर बना लेना चाहता है। पूरे उपन्यास में आस-पास के जीवन और उनसे जुड़े पात्रों का वर्णन है और उन गतिविधियों का बार-बार जिक्र है जिनकी व्याख्या दोनों पात्र करते हैं। पुरुष पात्र के लिए सभ्य समाज में नैतिक अनैतिक कहे जाने वाले तथ्यों के भेद अप्रिय हैं। इसलिए वह उन अनैतिक मगर आकर्षक पापों के माध्यम से अपनी दीन-हीनता दूर करना चाहता है। इसके लिए उसके तर्क भी हैं जो आसपास के परिवेश-पात्रों की गतिविधियों की जानकारी से उसने हासिल किए हैं। स्त्री-पात्र ऐसे तर्कों का खण्डन करती रहती है और पुरुष-पात्र को उसके कर्त्तव्य का बोध कराती रहती है।

दोनों पात्रों का सामाजिक यथार्थ को देखने का नजरिया बहुत तीखा है। प्रकारांतर से यह लेखक का भी नजरिया है। पात्र में आक्षेपित यह दृष्टि पाठक को ऐसे यथार्थ से परिचित कराती है जिससे पूर्व परिचित होने के बावजूद वह पुन: परिचय प्राप्त करता है। यहाँ दोनों पात्रों का यह संवाद द्रष्टव्य है—

सुनते हैं, साँप तो खाली हवा पी के रहता है।
इसी भरम में तो शिकार करता है साँप।
जइसे नेतवा करता है, चौधरिया करता है।
हाँ, लकदक खादी का भरम बनाए हैं दोनों।

नेताओं और सामंतों की तुलना साँप के चरित्र से करना केवल निम्नवर्गीय पात्रों की अपनी मानसिकता नहीं है। यह एक सृजित स्थिति है जिसके माध्यम से हम पात्रों के द्रष्टा भाव से जुड़ते हैं और लेखक की मानसिकता की विशेषता को पहचान लेते हैं। यह लेखक है जो पात्रों की मनोरचना को प्रासंगिक और सक्रिय टिप्पणियों के लिए प्रेरित करता है। पुरुष पात्र का संवाद कई जगह इस तीव्रता के साथ सामने आता है।

'कानून-वानून सब गरीब-गुरबा बदे है। जो जबरजंग है, कानून उनके ठेंगे पर रहता है।' यह संवाद हमारे सामने उस चिरभोक्ता का स्वर बनकर सामने आता है जो वर्गीय परिस्थिति का मारा है। पुरुष-पात्र ऐसा ही भोक्ता है। वह जानता है कि जो प्रचलित यथार्थ है, वह उपलब्ध वास्तविकता को सीमांकित कर देता है। इस सीमांकन के चलते ही पुरुष पात्र नई परिस्थितियों के सामने सशक्त ढंग से प्रकट होना चाहता है और स्त्री पात्र बार-बार उसकी अशक्तता की वस्तुस्थिति का आईना उसे दिखा देती है।

द्रष्टव्य यथार्थ की विवरणात्मकता, वास्तव और आकांक्षा के द्वंद्व के विस्तार में फैला यह उपन्यास पात्रों की सोच में शामिल दु:खकथा को बार-बार हमारे

सामने लाता है और एक दु:खांत की परिणति को प्राप्त करता है। उपन्यास के अन्त में मूल कथा की उल्लेख्य पात्र ननकी जहर से मर जाती है। प्रतीक रूप में देखें तो यह जहर उस परिवेश का भी है जिसका सामना कच्ची उमर से ही ननकी कर रही है। पूरे उपन्यास में ननकी की सक्रियता कहीं नहीं है। वह विस्तृत संवादशैली में चल रही कथाधारा का आधार भर है। स्त्री-पात्र के लिए यह आधार दूसरे किस्म का भावबोध रच रहा है, मगर पुरुष-पात्र किसी और भावबोध से संचालित होकर शुरु से अन्त तक अपनी आँच दिखाता है। यह उसका मनस्ताप भी है जो उपलब्धि विहीन जीवन में सामने आता है।

उपन्यास की भाषा में पूर्वी उत्तर प्रदेश की बोली का नाटकीय रंग कई जगह देखने को मिलता है। लेखक ने संवाद शैली का जो शिल्प चुना है उसमें एकरसता का खतरा रहता है, मगर इस खतरे का वह कहीं शिकार नहीं होता है। पाठक इस उपन्यास के शिल्प में एक बार प्रवेश करता है तो फिर इसे पढ़ ही डालता है। शिल्प की नवीनता इस उपन्यास की खासियत है।

— प्रदीप तिवारी

ननकी
बच्चन सिंह
प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, चौक, वाराणसी
मूल्य : 60 रुपये

प्रसाद-स्मरण

क्या आप जानते हैं कि ''प्रसाद जी स्वभाव से बड़े सुरीले थे, संगीत उनका स्वर ललित था। कविता-पाठ भी सस्वर करते। उन्होंने संगीत का कभी अभ्यास न किया था, पर ठुमरी-दादरा, चैती, पूरबी आदि धुनें गुनगुनाया करते, उनमें दर्द होता। भैरवी, भीमपलासी सिंधुरा, कालिंगड़ा, परज, छायानट, खम्माज, तिलककामोद, बिहाग, झिझौटी आदि वे मजे में गा लेते। दरबारी कान्हड़ा और मालकौंस राग उन्हें प्रिय थे।''? (रायकृष्णदास)।

क्या आप जानते हैं कि आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के अभिनंदन में काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा किए गए आयोजन में ''प्रसादजी ने 'लज्जा सर्ग' का पारायण प्रारम्भ किया। ज्यों-ज्यों पाठ आगे बढ़ता गया श्रोता मंत्रमुग्ध होते गए। द्विवेदीजी प्रसादजी के छंद शिल्प के कटु आलोचक थे। वे उसे 'रबड़ छंद' कहते थे। 'लज्जा सर्ग' के काव्यसौंदर्य, उसकी प्रेषणीयता से उनकी आँखों से अश्रु-निपात होने लगा।'' (सालिकराम मिश्र)।

क्या आप जानते हैं कि 18 अप्रैल 1936 को निराला ने प्रसादजी को एक पत्र में लिखा कि ''मैंने अपना कुछ भी आपको नहीं दिया और आपका सब कुछ ले लिया, मुझसे कुछ प्राप्ति की आशा आपको होनी भी नहीं चाहिए और मुझे उत्तरोत्तर पाते रहने की छोड़नी नहीं। शायद इसी आधार पर, मैंने अपनी बहुत सी किताबें यद्यपि मित्रों को खरीद-खरीद कर भेंट कीं, आपके पास एक भी नहीं भेज सका। पर मैंने सुना है आप उपनिषदों से नीचे उतरना पसन्द नहीं करते। फिर भी मैं प्रयत्न करूँगा, यदि आपको नीचे उतार सकूँ।''

क्या आप जानते हैं कि राय कृष्णदास ने प्रसादजी को मंसूरी आमंत्रित करते हुए 27 सितम्बर 1921 को जो पत्र भेजा था उसमें सिफ यह लिखा कि'' आइए। अवश्य आइए। अनुग्रहपूर्वक आइए। कृपापूर्वक आइए। दयापूर्वक आइए। स्नेहपूर्वक आइए। प्रसन्नतापूर्वक आइए। मानपूर्वक आइए। अभिमानपूर्वक आइए। भावपूर्वक आइए। भंगीपूर्वक आइए। अदा से आइए। साज से आइए। आइए.... आइए।

दादाजी के आग्रह से आइए। केशवजी के आग्रह से आइए। देसाईजी के आग्रह से आइए। सेठजी के आग्रह से आइए। सबर बाबू के आग्रह से आइए और.... इस जन के आग्रह से आइए।''?

बीसवीं शताब्दी के एक हिन्दी मूर्धन्य जयशंकर प्रसाद के बारे में ऐसी अनेक अंतरंग बातों, उक्तियों, घटनाओं और प्रसंगों का मुझे पता न चलता अगर हाल ही में वयोवृद्ध पुरुषोत्तमदास मोदी द्वारा सम्पादित और अपने विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी से प्रकाशित पुस्तक 'अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर प्रसाद' की एक प्रति उन्होंने कृपापूर्वक मुझे न भेजी होती। प्रसादजी की हस्तलिपि में अंग्रेजी में लिखे पत्र की एक छायाप्रति भी उसमें है जिसमें किसी 'पद्मिनी हेयर आयल के रजिस्ट्रेशन' को लेकर कुछ लिखा गया है। प्रसाद के तत्कालीन भौतिक और साहित्यिक परिसर का बहुत आत्मीय परिचय इस पुस्तक में संकलित सामग्री से मिलता है जिसमें शिवपूजन सहाय, जैनेन्द्रकुमार, रामवृक्ष बेनीपुरी, हजारीप्रसाद द्विवेदी, नंददुलारे वाजपेयी, केशवप्रसाद मिश्र, महादेवी वर्मा, माखनलाल चतुर्वेदी, उग्र, सीताराम चतुर्वेदी, अमृतलाल नागर आदि द्वारा लिखे गए लेख, संस्मरण, पत्रादि शामिल हैं। हो सकता है कभी कोई इस सारी सामग्री के आधार पर प्रसादजी की सुचिंतित और सुशोधित जीवनी लिखे।

'जनसत्ता' से **— अशोक वाजपेयी**

खुशवन्त सिंह की आत्मकथा

सच, प्यार और थोड़ी सी शरारत

अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध पत्रकार, स्तम्भकार और कथाकार खुशवन्त सिंह ने आत्मकथा के माध्यम से अपने जीवन के राजनीतिक, सामाजिक माहौल की पुनर्रचना तो की है, पत्रकारिता की दुनिया में झाँकने का मौका भी मुहैया किया है। खुशवंत सिंह यह काम बड़ी निर्ममता और बेबाकी के साथ करते हैं। खास बात यह है कि इस प्रक्रिया में औरों के साथ उन्होंने खुद को भी नहीं बख़्शा है।

पृष्ठ 388 मूल्य : 295

हिन्दी और उर्दू

आज उर्दू शायरी पाठकों में विशेष रूप से लोकप्रिय हो रही है। उर्दू के शायर कैफी आज़मी, निदा फ़ाज़ली, बशीर बद्र, जानिसार अख्तर, फ़िराक़ गोरखपुरी आदि की पुस्तकें नागरी लिपि में मुद्रित होकर प्रकाशित हो रही हैं। इसका प्रभाव हिन्दी कविता की भाषा पर भी पड़ रहा है। क्या ही अच्छा होता यदि उर्दू की पुस्तकें नागरी लिपि में भी प्रकाशित होतीं तो दो भाषा की दूरी समाप्त होती और साहित्य में गंगा-यमुनी संस्कृति का विकास होता। एक साहित्य का दूसरे साहित्य में परकाया प्रवेश होता। भाषा साम्प्रदायिक नहीं होती। भाषा अपने साहित्य के माध्यम से एक-दूसरे को जोड़ती हैं और एक समन्वित संस्कृति का विकास करती हैं। हमारे देश में इसकी बहुत बड़ी आवश्यकता है। हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं का विकास एक-दूसरे के परस्पर सम्पर्क से हुआ है, उसे और विकसित करने की अपेक्षा है।

— सम्पादक

हिन्दी-उर्दू के रचनकारों और पाठकों के बीच रचनात्मक संवाद आज की जरूरत है और एक सांस्कृतिक जिम्मेदारी भी। मिलन के अवसर शुरू से ही आते रहे हैं और कवि सम्मेलनों के मंच पर भी हिन्दी के लोकप्रिय कवि और उर्दू शायर साथ-साथ कविता सुनाते रहे हैं। **— केदारनाथ सिंह**

भारत-पाक रिश्तों की कटुता के बावजूद सरहद के दोनों ओर का उर्दू साहित्य आज भी उदार और मानवतावादी है। इसमें फिरकापरस्ती का कोई जहर नहीं। उर्दू के नये साहित्य की आवाज भी भाईचारा, दोस्ती और इंसानियत के लिए है। **—गोपीचंद नारंग**

वेद की कविता का लोकार्पण

राज्यपाल डॉ० भाई महावीर ने 18 जनवरी 2002 को भोपाल में राजभवन में प्रभुदयाल मिश्र द्वारा रचित 'वेद की कविता' काव्य-संग्रह का विमोचन किया। इस काव्य संग्रह में ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद के चुनिन्दा 37 सूक्तों का काव्यानुवाद किया गया है। राज्यपाल ने कवि श्री मिश्र को वेदों के सूक्तों को सरल भाषा में सारगर्भित करने पर बधाई और शुभकामनाएँ दीं। इस अवसर पर मध्यप्रदेश के तुलसीमानस प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष रमाकांत दूबे तथा पदाधिकारी वाई०एन० मिश्र और एल०एल० खण्डेलवाल भी उपस्थित थे। मूल्य : 120.00

पत्र-पत्रिकाएँ

आज देश के विभिन्न क्षेत्रों की भाषाओं में अभिव्यक्ति की उत्कंठा है। हिन्दी देश की व्यापक भाषा है। अत: अहिन्दी-भाषी क्षेत्रों से भी हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ बहुत बड़ी संख्या में निकल रही हैं। ये पत्रिकाएँ उस क्षेत्र को रचनात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करने के साथ-साथ अपनी समस्याओं को भी उजागर करती हैं। यह आवश्यक है कि इन क्षेत्रीय तथा छोटी पत्रिकाओं पर ध्यान दिया जाय। उनकी संवेदना को अनुभव किया जाय और उन्हें परितोष प्रदान करने का प्रयास किया जाय। इसके लिए अपेक्षा है कि इन पत्रिकाओं को गम्भीरता से लिया जाय। भारत सरकार केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय में एक प्रकोष्ठ का गठन कर इन पत्रिकाओं में व्यक्त विचारों और समस्याओं पर अपनी आख्या शासन (संबद्ध विभागों मंत्रालयों) को सौंपे। इससे देश में राष्ट्रीय एकता स्थापित करने में बड़ी मदद मिलेगी और संवादहीनता से मुक्त हुआ जा सकेगा।

हिन्दी आभूषण (त्रैमासिक)
सम्पादक : सूर्यनाथ चतुर्वेदी
सम्पर्क : 16/9, हरीविला, कृष्णानगर
अहमदाबाद
(वार्षिक 100.00)

तुलसी प्रभा (मासिक)
सम्पादक : मंधान
सम्पर्क : सिंहभूमि जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन
तुलसी भवन, बिष्णुपुर, जमशेदपुर
(वार्षिक 150.00)

संदर्भ (त्रैमासिक)
सम्पादक : डॉ० रामकुमार तिवारी
सम्पर्क : चुरू कोठी हाता, मोराबारी, राँची
(प्रति अंक 20.00)

आंतर भारती (मासिक)
सम्पादक : प्राचार्य सदाविजय आर्य
सम्पर्क : 430, शनिवार पेठ, पुणे
(वार्षिक 30.00)

शब्द कारखाना (त्रैमासिक)
सम्पादक : रमेश नीलकमल
सम्पर्क : अक्षर विहार, अवन्तिका मार्ग
जमालपुर (बिहार)
(वार्षिक 50.00)

मेरा घरौंदा (मासिक)
सम्पादक : मधुराज मधु
सम्पर्क : फ्लैट-104, 11/बी० 34
शान्तिनगर, मीरा रोड (पूर्व)
ठाणे

शब्दशिल्पियों के आसपास (मासिक)
सम्पर्क : पड़ाव प्रकाशन
एच०-3, उद्धवदास मेहता परिसर,
नेहरू नगर
भोपाल-462003
(वार्षिक 25.00)

आध्यात्मिक तथा अन्य ग्रन्थ

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज के ग्रन्थ

मनीषी की लोकयात्रा (म.म.पं. गोपीनाथ कविराज का जीवन-दर्शन) 300
तांत्रिक वाङ्मय में शाक्त दृष्टि 100
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1-2) 80
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 3) 50
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र-साधना *रमेशचन्द्र अवस्थी* 50
परातंत्र साधना पथ 40
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्वकथा 250
श्री श्री सिद्धिमाता प्रसंग 20
(कायाभेदी ब्रह्मवाणी तथा विवरण सहित)
भारतीय धर्म साधना *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 80
तन्त्र और आगम शास्त्रों का दिग्दर्शन 15
ज्ञानगंज 60
कविराज प्रतिभा 64
दीक्षा 60
श्री साधना 50
स्वसंवेदन 50
प्रज्ञान तथा क्रमपथ 80
तांत्रिक साधना और सिद्धान्त 120
श्रीकृष्ण प्रसंग 250
काशी की सारस्वत साधना 35
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी 100
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग-1) 200
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग-2) 120
सनातन-साधना की गुप्तधारा 100
अखण्ड महायोग 50
क्रम साधना 60
भारतीय साधना की धारा 30
परमार्थ प्रसंग (प्रथम खण्ड) 150
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान 20

पं० गोपीनाथ कविराज समकालीन संत-महात्मा

सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन *नंदलाल गुप्त* 160
English Edition *In Press*
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 250
पुराणपुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी *सत्यचरण लाहिड़ी* 120
नीम करौरी के बाबा *डॉ. बदरीनाथ कपूर* 12
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान *सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150
सोमबारी महाराज (उत्तराखण्ड की अनन्य विभूति) *हरिश्चन्द्र मिश्र* 50
Purana Purusha Yogiraj Sri Shyama Charan Lahiree *Dr. Ashok Kr. Chatterjee* 400

तंत्रसिद्ध पुराण पुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी

पुराण पुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी (जीवनी) 120
धर्म और उसका अभिप्राय 80
प्राणमयं जगत *अशोककुमार चट्टोपाध्याय* 22
श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद 100
आत्मबोध *श्रीभूपेन्द्रनाथ सान्याल* 30
श्रीमद्भगवदगीता (3 खण्डों में) *''* 375
विल्व-दल (द्वितीय खण्ड) *श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल* 25
आश्रम चतुष्टय *श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल* 25
मोक्ष साधन या योगाभ्यास *श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल* 15
दिनचर्या *श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल* 20
आत्मानुसंधान और आत्मानुभूति *''* 20
Purana Purusha Yogiraj Shri Shyama Charan Lahiree (*Biography*) 400
योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी *शिवनारायण लाल* 150

पं० अरुणकुमार शर्मा के ग्रन्थ

मारणपात्र 250
तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी 180
वह रहस्यमय कापालिक मठ 180
मृतात्माओं से सम्पर्क 200
परलोक विज्ञान 300
कुण्डलिनी शक्ति 250
तीसरा नेत्र (भाग-1) 250
तीसरा नेत्र (भाग-2) 300
मरणोत्तर जीवन का रहस्य (भाग-1) 35

अन्य आध्यात्मिक तथा धार्मिक ग्रन्थ

धर्म क्षेत्रे कर्म क्षेत्रे : श्रीमद्भगवद्गीता *स्यमन्तक मणि मिश्र* 94
सब कुछ और कुछ नहीं *मेहेर बाबा* 60
जपसूत्रम (प्रथम तथा द्वितीय खण्ड) *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* (प्रत्येक) 150
सोमतत्व *सं. प्रो. कल्याणमल लोढ़ा* 100
वेद व विज्ञान *स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 80
अनन्त की ओर (एक साधक की आध्यात्मिक अनुभूतियाँ) *अशोककुमार* 90

चिंतक, संत, योगी, महात्मा

उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा *डॉ. गिरिराज शाह* 100
सन्त रैदास *श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला* 60
योगिराज तैलंग स्वामी *विश्वनाथ मुखर्जी* 40
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन *डॉ. अर्जुन तिवारी* 50
भारत के महान योगी
भाग 1-2 (संयुक्त) *विश्वनाथ मुखर्जी* 100
भाग 3-4 (संयुक्त) *विश्वनाथ मुखर्जी* 100
भाग 5-6 (संयुक्त) *विश्वनाथ मुखर्जी* 100
भाग 7-8 (संयुक्त) *विश्वनाथ मुखर्जी* 100
भाग 9-10 (संयुक्त) *विश्वनाथ मुखर्जी* 100
भारत की महान साधिकाएँ *विश्वनाथ मुखर्जी* 40
महाराष्ट्र के संत महात्मा *ना.वि. सप्रे* 120
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान *सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150
दयानन्द जीवन गाथा *भवानीलाल भारतीय* (यंत्रस्थ)
आदि शंकराचार्य *डॉ० जयराम मिश्र* 80

एकता के दूत शंकराचार्य	*डॉ. दशरथ ओझा*	125
गुरुनानक देव : जीवन और दर्शन	*डॉ. जयराम मिश्र*	125
स्वामी रामतीर्थ : जीवन और दर्शन	*''*	200
चैतन्य महाप्रभु	*अमृतलाल नागर*	90
भगवान बुद्ध	*धर्मानन्द कोसाम्बी*	160
करुणामूर्ति बुद्ध	*गुणवंत शाह*	25
महामानव महावीर	*गुणवंत शाह*	30
मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन	*डॉ. रघुवंश*	160

महाभारत के पात्र आधारित उपन्यास

हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य	*युगेश्वर*	140
कृष्ण की आत्मकथा (8 भाग)	*मनु शर्मा*	2400
मृत्युंजय	*शिवाजी सावन्त*	280
द्रोण की आत्मकथा	*मनु शर्मा*	300
पार्थ	*युगेश्वर*	225
कृष्णा	*युगेश्वर*	200
कर्ण की आत्मकथा	*मनु शर्मा*	350
कृष्ण और मानव संबंध	*हरीन्द्र दवे*	200
कृष्ण का जीवन संगीत	*गुणवंत शाह*	300
पांचाली (नाथवती-अनाथवत)	*बच्चन सिंह*	125
माधव कहीं नहीं हैं	*हरीन्द्र दवे*	105
गांधारी की आत्मकथा	*मनु शर्मा*	350
वैजयंती (2 भागों में)	*चित्रा चतुर्वेदी* (सेट)	500

श्रीमद्भगवद्गीता

गीता रहस्य	*लोकमान्य तिलक*	300
हिन्दी ज्ञानेश्वरी	*संत ज्ञानेश्वर, अनु. ना.वि. सप्रे*	180
श्रीमद्भगवद्गीता (3 खण्ड)	*श्यामाचरण लाहिड़ी*	375
गीता प्रवचन	*विनोबा भावे*	20
गीता प्रबन्ध	*श्री अरविन्द*	150
गीता-तत्त्व-बोध (खण्ड 1-2)	*बालकोबा भावे*	300
कृष्ण का जीवन संगीत	*गुणवंत शाह*	300
कृष्ण और मानव सम्बन्ध	*हरीन्द्र दवे*	80
श्रीमद्भगवद्गीता	*शांकरभाष्य, नीलकण्ठी*	400
श्रीमद्भगवद्गीता (2 भाग)	*मधुसूदन टीका, हिन्दी व्याख्या*	1250
यथार्थगीता	*स्वामी अड़गड़ानन्द*	150
भारत सावित्री (3 भाग)	*वासुदेवशरण अग्रवाल*	80

निबन्ध

आदि, अन्त और आरम्भ	*निर्मल वर्मा*	195
आदमी की निगाह में औरत	*राजेन्द्र यादव*	200
अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य	*सं०-राजेन्द्र यादव : अर्चना वर्मा*	250

अध्यात्म

जपसूत्रम भाग 1-2	*स्वामी प्रत्यगात्मानन्द* (प्रत्येक)	150
कथा त्रिदेव की	*रामनगीना सिंह*	25
गङ्गा : पावन गङ्गा	*डॉ० शुकदेव सिंह*	25

सूचना

'भारतीय वाङ्मय' का जनवरी अंक फरवरी के प्रथम सप्ताह में पोस्ट किया गया क्योंकि डाक विभाग द्वारा पंजीकरण का नवीनीकरण विलम्ब से किया गया। ऐसी स्थिति में फरवरी-मार्च अंक संयुक्तांक प्रकाशित करना पड़ा।जिसका हमें खेद है।

चरित्रहीन

आबिद सुरती

180.00

अपने जिस्म की नुमाइश करनेवाली एक लड़की की दास्तान....

साठ के दशक से कैबरे डान्स की ऐसी हवा चली थी कि दुनिया का शायद ही कोई देश उससे अछूता रहा होगा जैसे नवाबों के दौर में तवायफों का दबदबा था, वैसे ही उस दशक में कैबरे डान्सर जनमानस पर छायी थी। बम्बई के शानदार होटलों में डिनर के साथ कैबरे डान्स का कार्यक्रम होना गर्व की बात थी। बालीवुड की फिल्मों में हेलन का कैबरे अभिन्न अंग बन गया था।

'चरित्रहीन' उसी दशक की एक कैबरे-गर्ल की कहानी है, जो अपना जीवन नये सिरे से शुरू करना चाहती है। वह तंग आ चुकी है अपने ही जिस्म की नुमाइश से। अब उसे तीन दीवारों का खुला मंच नहीं, चहारदीवारी में बन्द गृहस्थी चाहिए। उसे हजारों पुरुषों की प्रशंसा नहीं, एक मर्द का सच्चा प्यार चाहिए।

उसकी इच्छा फलीभूत हुई, लेकिन उसके सपने चकनाचूर हो गये। जीवन घुटन और सीलन भरा तहखाना बन गया और साँस लेने के लिए उसमें कोई सुराख भी नहीं था। वह क्या करती?

पृष्ठ 224 मूल्य : 180

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 3 **फरवरी-मार्च 2002** **अंक : 2-3**

प्रधान सम्पादक

पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक

परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क

रु० 30.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन

वाराणसी

के लिए

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी

द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत **रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2002**

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

: (0542) 353741, 353082 ● Fax : (0542) 353082 ● E-mail : vvp@vsnl.com ● vvp@ndb.vsnl.net.in